We Live with Great Vision
हम ऊँची दृष्टि के साथ जियेंगे

धरती माँ की पुकार कहें, हम सबके प्यारे पृथ्वी ग्रह की पुकार कहें, ये पुकार जो ''मेक मी हेविन'' के रूप मे उभरी। इस पुकार को ईश्वर पुत्रो ने स्वीकार किया। धरती अपना वह स्वार्गिक रूप प्राप्त करें इसके लिए ईश्वर पुत्रो ने जीवन के सामान्य सिद्धांतो को स्वीकार किया। सामान्य सिद्धांतो में से यह एक सिद्धांत ''हम ऊँची दृष्टि के साथ जियेंगे'' हमें बहुत कुछ देने की क्षमता रखता है। संसार के इतिहास को देखे तो बड़े से बड़े परिवर्तन मनुष्य की दृष्टि से हुए है। यही दृष्टि जब ऊँची हो जाती है तब ये परिवर्तन मानव जाति, प्राणी जगत , तथा धरा के लिए कल्याणमयी हो जाते है। जब यह दृष्टि सामान्यय रहती है तब व्यक्ति द्वारा घटित परिवर्तन भी सामान्य श्रेणी में आते है। घटनाओ के सन्दर्भ में , कुछ नया करने के सन्दर्भ में अथवा कुछ विशेष पाने के सन्दर्भ में महत्तवपूर्ण रोल यही दृष्टि अदा करती है। जब यह दृष्टि ऊँचाई लिए होती है तब परिवर्तन की चाह से लेकर परिणाम प्राप्त करने तक की यात्रा सुखद होती है।

आज जबकि सम्पूर्ण मानव जाति के सामने इतना विशाल और विराट कार्य सामने खड़ा है कि हम सब मिलकर अपने प्यारे पृथ्वी ग्रह का वह स्वर्गिक रूप बनाये जहाँ प्रकृति व विज्ञान मानव के हित में काम करता है। जहाँ धर्म आध्यात्म में समाहित हो समाज को सम्प्रदाय मुक्त रखता है। जहाँ जीवन संर्कीणताओ से ऊपर ऊँची दृष्टि लिये होता है। जहाँ समाज में सुख-शान्ति व समृद्धि की धारा बहती है। एक ऐसा युग जहाँ व्यक्ति का जीवन रोग-शोक, कलह-कलेश, ईष्या- द्वेष की परछाई से भी परे आनन्दमयी होता है। ऐसे महान युग सतयुग के समय धरती पर स्वर्ग था जिसे अब हम सभी को मिलकर बनाना है। यह कार्य ग्रेट विजन से ही सम्भव है। हमारे विजन में ये ऊँचाई आये ये महानता आये इसके लिए मनुष्य जीव को प्रभु के साथ का सहारा लेना ही होगा। परमात्मा को द्विय दृष्टि विधाता, ज्ञान चक्षु दाता, द्विय बुद्धि के दाता कहा जाता है। अब जबकि हम आत्माये है और परमपिता परमात्मा की हम सन्तान है तो हमें चाहिये हम अपने पिता के साथ से यह ऊँची दृष्टि उनसे प्राप्त करें।

सामान्य दृष्टि धरा को स्वर्गिक रूप नहीं दिला सकती। धरा को स्वर्गिक रूप दिलाने के लिए वह परिवर्तन जो होना चाहिये उसे ऊँची दृष्टि से ही देख पाना सम्भव है। वर्तमान संसार जिसे धर्म की भाषा में कलियुग कहा जाता है। इस संसार में सम्पन्न लोग यहां ही अपने को स्वर्ग मे समझते है। भल मरणोपरान्त वे भी कहते स्वर्ग सिधार गया। विश्वामित्र ने भी धरा पर स्वर्ग बनाने की कल्पना

की। रावण ने भी स्वर्ग तक सीढ़ी लगाने के प्रयास किये परिणाम विनाशकारी साबित हुए। अतः परिवर्तन की आकांक्षा से लेकर परिणाम हासिल करने तक की इस यात्रा को यदि हम मानव जाति व विश्व व्यवस्था के लिए सुखद् बनाना चाहते है तो हमें दृष्टि में कल्याण की भावना को समाहित करना होगा। परमपिता परमात्मा को उनके गुणों के कारण ही शिव कहा जाता है। शिव माना ही कल्याणकारी जब व्यक्ति का जीवन ईश्वर की भाँति कल्याण की ओर उन्मुख होता है तब उसके विजन में ऊँचाई झलकती है।

विजन की ऊँचाई अपने में सर्वहित लिए होती है। विजन की स्पष्टता अपेक्षित परिवर्तनों को अवश्यम भावी के रूप में देखती है। वे परिर्वतन जो हम चाहते है यदि धरती को स्वर्गिक रूप प्रदान करते है तभी ऐसे परिवर्तनो की आकांक्षा की सार्थकता है। यदि ये परिवर्तन हमारे प्यारे पृथ्वी ग्रह को वह रूप प्रदान करते है जिसके लिए इसकी पुकार है तभी ऐसे परिवर्तनों की साथर्कता है। ये परिवर्तन लाने के लिए यू तो एक बड़े आन्दोलन की जरूरत है। पर यह जरूरी नही कि आज की इस व्यस्त जीवन चर्या में हर कोई आन्दोलन के साथ जुड़े। वर्तमान परिस्थितियों मे सबसे सहज सम्भव है कि व्यक्ति अपने विजन मे ऊँचाई लाये। यह ऊँचाई उसके रोजमर्रा के कार्यो मे चाहिये। आज व्यक्ति जिस भी क्षेत्र से जुड़ा है उसे चाहिये कि वह उसे जीवन निर्वाह का साधन बनाने के साथ-साथ उसमें ऐसी दृष्टि विकसित करे कि मेरा यह कर्म विश्व के वातावरण को बेहतर बनाने मे सहभागी बने। विश्व की व्यवस्था को बेहतर बनाने में सहभागी बने। जो भी हम जीवन मे कार्य कर रहे है वह हमारे हित साधने के साथ-साथ लोक हित मे भी हो। जब यह दृष्टि बन जाती है तब हर व्यक्ति आन्दोलन का हिस्सा बन जाता है। उन्हें अपने आप पर गर्व होना चाहिये जो अपने जीवन में ऐसी ऊँची दृष्टि रख कर अपने कार्यो का संचालन कर रहे हैं। ऐसे लोग महान है वे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से उस आन्दोलन का हिस्सा है जो धरती मां की पुकार ''मेक मी हेविन'' को पूरा करने के लिए कार्यरत है।

ऐसे महान परिवर्तन को हम जब ईश्वर दृष्टि से देखते है तब हमें यह दृष्टि की ऊँचाई प्राप्त होती है। यह विजन की ग्रेटनेस हमें कम ऊर्जा लगाकर अच्छे परिणाम प्राप्त करने में सक्ष्म बनाती है, चाहे वे हमारे दैनिक कार्य ही क्यों न हो। यह ऊँची दृष्टि परिवर्तन से परिणाम तक के बीच आने वाले अवयवो लक्ष्य, प्रणाली, प्रयास को भी वह रूप प्रदान करती है जिनके हर क्षण में सफलता समायी होती है। ऐसे दृष्टि की ऊँचाई के महत्तव को समझने वाले ही जीवन को इस सामान्य से सिद्धांत कि ''हम ऊँची दृष्टि के साथ जियेंगे'' का अनुसरण कर धरती मां की पुकार मेक मी हेविन को पूरा करते है।

लक्ष्य प्राप्ति से अधिक महत्तवपूर्ण लक्ष्य चयन

ये दृष्टि की ही कमाल है कि वह पैनी नजर रख लक्ष्यो का निरधारण करती है। इन्सान लक्ष्य बनाता है लक्ष्य तक पहुॅचने के लिए जी जान जुटाता है। लक्ष्यो को हासिल करने के लिए वह जान पर भी खेलता है और कई बार छोटे- छोटे लक्ष्य पूरा करने में जान भी चली जाती है। कई लोगो की दृष्टि इतनी स्पष्ट होती है कि वे जो लक्ष्य बनाते है उन्हे सहज ही पूरा कर लेते है। लक्ष्यो को पूरा करना बड़ी बात नही है, दृष्टि का क्लीयर होना भी बड़ी बात नही है, लेकिन सबसे बड़ी बात है दृष्टि मे वो ऊँचाई होना, दृष्टि में वो महानता होना कि हमारे लक्ष्य इस पृथ्वी के स्वरूप को पृथ्वी वासियों के जीवन को खुशहाल बनााने वाले हो। चाहे उसमें हम स्वयं हो अथवा संसार में रह रहे कोई भी लोग हो। इसलिए लक्ष्यों को पूरा करने से भी महत्तव पूर्ण बात है लक्ष्यो को चुनना। ये लक्ष्य हमारे

कर्मो को निर्धारित करते है। कर्म ही हमारे लिए फल का कारण बनते है। यह कर्मफल मानव के जीवन को प्रभावित करते हैं और केवल वर्तमान को ही नहीं बल्कि भविष्य को भी प्रभावित करता है। कर्मो का प्रभाव आत्मा पर पड़ता है इसी कारण आत्मा इस जन्म अथवा भविष्य जन्म में भी कर्मो के फल से प्रभावित होता है।

हम पृथ्वी वासियो के सामने जबकि इतना बड़ा चैलेन्ज है कि विषम परिस्थितियों में भी हम धरती को वह स्वरूप दें जो कालान्तर में था। इसके लिए हमें अपने कर्मो को बेहतर बनाने के लिए लक्ष्यो का चयन बहुत ही सावधानी पूर्वक व महानता की दृष्टि से करना होगा। गलत लक्ष्यो का चुनाव हमारे ही लिए गलत सोच का कारण बनेगा। यह गलत सोच गलत कर्मो का कारण बन इन्सान से गलत कर्म करायेगी। ऐसे गलत कर्मो का परिणाम जहाँ एक ओर विश्व के मानव को प्रभावित करेगा वहीं उस व्यक्ति के वर्तमान व भविष्य जन्म, जीवन को भी प्रभावित करेगा। ये गलत कर्म इन्सान मे गलत संस्कारों का निर्माण कर उसे स्वयं के अधीन बना लेते हैं। ऐसे हालात में गलत कर्म करने वाला व्यक्ति भी अपने कर्मो को श्रेष्ठ ही मानता है। गलत लक्ष्यो को अपनाने वाला व्यक्ति भी गलत संस्कारो की अधीनता के कारण स्वयं को ठीक ही अनुभव करता है। जब समाज में इस प्रकार के हालात उत्तपन्न हो समाज के पतन व विश्व की व्यवस्थाओ के लिए खतरा बनते है तो अनेक ढूंढे गये समाधान भी कारगर नही होते।

ऐसे हालातो से उबरने का यदि कोई समाधान है तो वह है ऊँची दृष्टि में। विजन की ग्रेटनेस ही वह हल सुझाती है जिससे व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन स्तर में परिवर्तन ही वयवस्थाओ में परिवर्तन का आधार बनता है। वैश्विक स्तर पर चाहे आतंकवाद हो, चाहे नक्सलवाद, भ्रष्टाचार हो या प्रयावरण की समस्या, भुखमरी हो या मंहगाई हो, अशिक्षा हो या शोषण हो, टेन्शन हो या फैशन हो, असमानता हो या संवादहीनता हो, असंवेदनशील होना हो या अत्याचार हो इन सब का हल व्यक्ति की दृष्टि मे महानता को विकसित करने मे है।

विश्व मे सबसे बड़ी समस्या है हर कोई अपने सोच को बेहतर समझता है उसके सोच के परिणाम स्वरूप उत्तपन्न हुए विचार उसकी गतिविधियो को संचालित करते है। ये गतिविधियां उसके जीवन कार्य, कार्य क्षेत्र, कार्य प्रणाली व समाज को प्रभावित करती है। ये प्रभाव जो उसके सोच का परिणाम बने उसकी दृष्टि मे वे सब उचित है। अन्य की दृष्टि मे ये अनुचित अथवा उचित हो सकते है। यह स्थिति राष्ट्राध्यक्षो के साथ हो सकती है, ये स्थिति कम्पनी मालिको अथवा उनके एग्जीक्यूटिव की हो सकती है। ऐसे हालातो मे उत्तपन्न हुए वे परिणाम जो पृथ्वी ग्रह के लिए खतरा है, वे परिणाम जो पृथ्वी ग्रह की पुकार ''मेक मी हेविन'' को सम्बल देने के बजाए विपरित प्रभाव डालने वाले है। ऐसे परिणाम न आये उसके लिए आवश्यक है हम सभी पृथ्वी वासी जीवन के सामान्य सिद्धांत को समझे और उनमे से भी महत्तवपूर्ण सिद्धांत ''हम ऊँची दृष्टि के साथ जियेंगे'' इसे समझे।

हम मनुष्य जीवो का परमात्मा से सम्बन्ध है हम उसे अल्लाह, भगवान, गॉड, ईश्वर, वाहे - गुरू, सतगुरू, प्रभु जो भी कहे। हम अब अपनी दृष्टि से देखने के बजाय उस मालिक की दृष्टि से देखना सीखें। ईश्वर महान है, अल्लाह ने हमें ये जीवन दी है। हम इस जीवन को तथा जीवन दायीनी पृथ्वी को अल्लाह की दृष्टि से देखे। जब हम ऐसी दृष्टि से देखने की आदत डालेंगे तब दृष्टि में महानता आयेगी। ये दृष्टि हमें स्वमान देगी व अन्य को सम्मान देगी। ऐसी ऊँची दृष्टि हमारे लक्ष्यों को कल्याणकारी स्वरूप देगी तथा सोच व कर्मो को बेहतर बनाये आपस मे प्रेम- भाईचारा बढ़ाये

विश्व को बेहतर व धरती को स्वर्ग बनायेगी, धरती पर पैराडाईज, बहिष्ठ का निर्माण करेगी, हम सभी के लिए सुख का आधार बनेगी।

ग्रेट विजन बनाये मेहनत को फलदार

फल खाना सबको अच्छा लगता, पेड़ फलों से लदे हो कितना अच्छा लगता। पर बिना मेहनत के फल नहीं मिलता। मेहनत करने वाले को मजदूर की संज्ञा दी जाती। मजदूर कहलाना मजबूरी उनके लिए जिन्हे अपनी रोटी के लिए भी दिन भर के श्रम पर निर्भर रहना पड़ता। श्रम की महिमा अपरमअपार लेकिन मेहनत करने वाले को लोग मजदूर समझे तो शोभा नहीं देता। श्रम मजदूरी न बने लेकिन श्रम शान बने ये तब हो जब श्रम करने के पीछे हमारा ग्रेट विजन हो। संसार मे मूर्तियां बनाने वाले अनेक है उनमे किसी की दृष्टि होती रोजी-रोटी के लिए बना रहे है। किसी की दृष्टि होती मिट्टी की मूर्तीयां बनाना हमारी कला है। हम कला के संरक्षण के लिए, विकास के लिए ये मूर्तियां बनाते है। किसी की दृष्टि हो सकती है हम मन्दिर की मूर्तियां बना रहे है जिनके दर्शन से लोगो की मनोकामनाए पूर्ण होती है। इस प्रकार एक ही कर्तव्य के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टि का होना हमारे विजन को दर्शाता है। कर्म के प्रति हमारा विजन जितनी महानता लिए होता है उतना ही वह कर्म सहजता से पूर्णता को प्राप्त होता है।

ईश्वर के विधान में भी कर्म का फल अमिट है। इसलिए ही कहा जाता कर्म के फल को भगवान भी नहीं टाल सकते। यदि उसे टालने की सामर्थ्य है तो उसी इन्सान में जिसके वे कर्म है। पुनः कर्मो मे श्रेष्ठता को धारण कर अथवा ईश्वरीय स्मृति रूपी महान कर्म से ही मनुष्य अपने कर्मो के फल को बदल सकता है। अतः जहाँ कर्म की इतनी महत्ता हो कि मनुष्य अपने कर्मो का फल भाग्य के रूप मे भी प्राप्त करता है उस कर्म के पीछे होने वाले श्रम के महत्तव को हमें महान दृष्टि से आंकने की जरूरत है। मनुष्य जीवन के लिए प्राप्त होने वाला आहार श्रम की ही देन है। तरह- तरह के बदलते मौसम मिजाज के बीच भी किसान भाईयों को खेतो-खलिहानों में मेहनत करते देखा जा सकता है। बड़े से बड़ी योजनाओ को मूर्तरूप देने के लिए साधारण दिखने वाले श्रमिको को पसीना बहाते देखा जा सकता है। बाबुओ के टेविलो पर फाइलो के अम्बार को हल्का करने लिए देर रात भी आफिॅसो मे समय को सफल करते देखा जा सकता है। हम सभी श्रम के पुजारी अपनी श्रम की पूँजी से संसार को गति मान बनाये हुए है। सभी का यह अनमोल श्रम, हमारी ये मेहनत मे परिवर्तित होती हुई ताकत फल दार बने इसके लिए हमें ऊँची दृष्टि रखकर जीना सीखना होगा।

ऊँची दृष्टि हमारी मेहनत को फलदार बनाती है। किन्ही भी कार्यो के प्रति दृष्टि की ये महानता दृष्टि की ये गहराई कार्यो की पूर्णता के लिए श्रेष्ठ प्रणालीयो का विकास कराती है। जब व्यक्ति अथवा समूह किसी लक्ष्य की ओर बढ़ता है तो लक्ष्य को पाने मे प्रणाली का महत्तवपूर्ण योग दान होता है। प्रणाली हमारे कर्मो की गुणवत्ता का निर्धारण करती है। यदि प्रणाली हमें ऐसे कार्यो को करने के लिए प्रेरित करती है जिन कर्यो में हिंसा, अत्याचार, आतंक, शोषण आदि का बोलवाला है तो परिणाम भल लक्ष्य को पाने वाले हो सकते है लेकिन ऐसे लक्ष्य की प्राप्ति का कोई अर्थ नही जो मानव को दानव बनाये। धर्म को कलंकित करें। ईश्वर की दुआओ से दूर करें। परस्पर इन्सान मे नफरत पैदा कर एक दो से दूर ले जाये। बल्कि लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए डिजाईन की गई हमारी प्रणालियां ऐसी हो जिनमें समय का पूर्ण सदुपयोग हो, मानव श्रम कम लगे, आर्थिक रूप से हमें किसी पर निर्भर न रहना पड़े, हमारी संकल्पना कम समय में व्यवस्थित रूप से स्वरूप को प्राप्त हो। यह प्राप्त हुआ स्वरूप हम सभी के इस प्यारे पृथ्वी ग्रह एवं हम सभी पृथ्वी निवासियों के लिए मंगल कारी हो। जब व्यक्ति अपने आत्म स्वरूप में स्थित हो ईश्वर पिता से अपना तार जोड़े हुए जीवन यापन करता है उसकी यह जीवन जीने की कला स्वयं उसके लिए व जगत के लिए उद्वारक होती है। ऐसी योग युक्त स्थिति में उसके लक्ष्य निस्वार्थ एवं बेहद जीवन की झांकी दिखाते है। ऐसे कल्याण मयी लक्ष्यो को अपना लक्ष्य बनाने वाला व्यक्ति ही ग्रेट विजन का धनी होता है। उसे तो जैसे ईश्वर का वरदान होता है कि किन्ही भी कार्यो को पूर्ण करने के लिए सम्मुन्त प्रणाली का विकास करना उनके लिए एकदम सहज होता है। उनकी श्रेष्ठ प्रणाली कम मेहनत मे अधिक एवं शीध्र फल प्राप्त कराती है। आज जबकी धरती मां को स्वर्ग बनाने का महान लक्ष्य हमारे सामने है तो आओ हम सभी प्रजापिता ब्रह्मा बाबा द्वारा रचित धरती को स्वर्ग बनाने वाली श्रेष्ठ प्रणाली का अध्ययन एवं वरण करे। एक ऐसी सशक्त व सहज प्रणाली जो मानव को स्वयं देवता एवं धरती को वैकुण्ठ बनाये। प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पाण्डव भवन, माउण्ट आबू, राजास्थान (भारत) से ऐसी ही एक सम्मुत प्रणाली का हम सब भी वरण करें

ऊँची दृष्टि की करामात निरन्तर प्रयास

फल निकलेगा कुछ करने से कुछ किये बिना तो अच्छी से अच्छी योजनाएं भी साकार नहीं होंगी। योजनाओ को अमली जामा पहनाने के लिए चाहिये निरन्तर प्रयास। जिनकी दृष्टि में ऊँचाई है वे तब तक नहीं रूकते जब तब की योजनाओ को पूरा नही कर लेते । ये अनवरत प्रयास करते रहने की ऊर्जा ऊँची दृष्टि से ही प्राप्त होती है। प्रयास सार्थक हो उसके लिए भी ऊँची दृष्टि चाहिये। ये ऊँची दृष्टि की ही करामात है जब तक उद्यम शील पुरूष अपने लक्ष्य को प्राप्त नही कर लेता तब तक वह अथक हो अपने प्रयासो में निरन्तरता बनाये रखता है और ये निरन्तर प्रयास उसे उसके लक्ष्य तक पहुॅचाते है।

सब कुछ सही-सही चले यह सदा व्यक्ति के हाथ में नही होता। जब हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे होते है उसमें कई कारक ऐसे उत्तपन्न होते है जो हमारी मंजिल में सहयोगी साबित होते है। साथ ही साथ कुछ ऐसे भी कारण बनते है जो हमारे और लक्ष्य के बीच व्यवधान बन जाते है। इन कारणों को निवारण में बदलना यह ऊँची दृष्टि से ही

सम्भव है। तूफान को तोहफा बनाना ये ज्ञान दृष्टि से ही सम्भव है। सूली को भी कांटा समझ उसमें अफसोस कर समय व्यर्थ न गवांना यह ऊँची दृष्टि से ही सम्भव है।

ज्ञान दृष्टि विपरित हालातो को समझ उन्हे अपने पक्ष में बनाने की सामर्थ्य रखती है। ज्ञान दृष्टि से परिपूर्ण व्यक्ति परिस्थितियों में अचल रह उन्हे अपने अनुकूल ढ़ाल उनसे भी फल प्राप्त करता है। ऐसे हालातो में वह अनुभव का खजाना प्राप्त करता हुआ अपने प्रयासो को गतिमान रखता है। वह टकराव के रास्ते को न अपनाकर समाधान ढूँढता है। आगे बढ़ता हुआ ऐसा व्यक्ति जहां लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है वहीं वह अपनी शक्ति व सामर्थ्य के प्रयोग से शाक्तियों व सामर्थ्य मे इजाफा करता है।

ऊँची दृष्टि रखने वाला व्यक्ति अर्जुन की भाँति आँख की पुतली को ही देखता है। वह लक्ष्य को पाने के लिए केवल आतुर ही नही होता बल्कि दृढ़ संकल्पित होता है। यह दृढ़ता उसके प्रयासो में निरन्तरता बनाये रखती है। उसका पुरूषार्थ अनवरत प्रवाह लिये उसे मंजिल की ओर बढ़ाता है। लक्ष्य स्पष्ट होने से उसकी ऊर्जा का सतत उपयोग होता है। लक्ष्य की ओर बढते हुए कदम उसे लक्ष्य के समीप पहुँचाने का स्पष्ट अहसास कराते है। वह प्राप्तियो के परिणाम स्वरूप अनुभव करता है कि लक्ष्य को पाने के लिए उसने मंजिल का इतना भाग पूर्ण कर लिया है। ये प्रत्यक्ष प्राप्तियां उसमे ऊर्जा के संचय का श्रोत बन नित नई ऊर्जा का उत्पादन करती है। ऊर्जा के इस पुर्न उत्पादन से, वह सदा ही स्वयं को प्रफुल्लित, उत्साहित महसूस करते हुए मंजिल की ओर बढ़ता जाता है।

ऊँची दृष्टि रखने वाला अपने लक्ष्य के प्रति केवल आशान्वित ही नही होता बल्कि वह अपने लक्ष्य को निश्चित भावी के रूप को जान वह निश्चिन्त अवस्था में रह उद्यम करता है। यह निश्चिन्त अवस्था उसे विपरित हालातो में अप्रभावित रखती है वह विपरित परिस्थितियों मे दूर दृष्टा बन अपने प्रयासो को नियन्त्रण मे रखते हुए उन्हे समुचित दिशा देता है ताकि उसके प्रयास व्यर्थ न जाकर साकार परिणाम प्राप्त कराये। हारना क्या होता है इसके बोध से वह जैसे परे होता है सांसारिक जगत मे हार समझी जाने वाली स्थिति मे भी वह ऊँची दृष्टि के परिणाम स्वरूप हित ढूंढ लेता है। संसार मे उद्यमियों के लिए सबसे बड़ी विडम्बना इसी बात की है कि जब वे हार का कड़वा स्वाद चखते है तो वे अवसाद अथवा तनाव के शिकार हो जाते है। वे कई बार आत्मग्लानि का शिकार हो आत्म हत्या जैसे कायरता पूर्ण प्रयास करते है। जहां जीवन के अस्तित्व की समाप्ति हो वहां निरन्तर प्रयास बनाये रखने की बात ही बेमानी होगी और धरा की पुकार का सुनना असम्भव। ऐसे मे परिवर्तन की आशा यदि जगती है तो उन्हे देखकर जो हार को जीत की ओर बढ़ने के एक पायदान के रूप मे देखते है, और उसे पीछे छोड़ आगे की सुध ले अपने निरन्तर प्रयासो से ऊँची दृष्टि से परिपूर्ण होने का जगत को अहसास कराते है। धन्य है वे जो कुछ करामात कर दिखलाते है।

सीखें परिणाम से

इच्छित परिणाम पाने के लिए हम सतत प्रयत्न करते है हम उन्हे काफी हद तक प्राप्त भी करते है। प्राप्त हुए परिणामों से हम कुछ सीखे इसमें सुन्दर भविष्य समाया हुआ होता है। जब हम परिणामों से सीखते है तो परिणाम तक पहुँचने की यात्रा हमें बहुत कुछ अनुभव कराती है। ये अनुभव हमारी शक्ति बनते हैं। ये अनुभव हमारी समझ को विकसित करते है। ठीक इसी रिति परिश्रम के परिणाम स्वरूप अथवा विधि के विधान के अनुरूप जो परिणाम आये वे अपने में अनेक सन्देश लिए हुए होते है इन सन्देशो को समझने के लिए इन सन्देशो में सकारात्मकता ढूढने के लिए ऊँची दृष्टि काम करती है। हम अपनी दृष्टि के अनुरूप परिणाम के सन्दर्भ में भाव विकसित करते है। ये भाव अपने अनुरूप भावना उत्तपन्न करते है। भाव व भावना के अनुरूप कर्म संचालित हो परिणाम को प्राप्त होते है। अभी के परिणाम भविष्य के परिणाम की आधार शिला बनते है। अभी के परिणामों के प्रति हमारी ऊँची दृष्टि भविष्य के परिणाम के लिए ऊर्जा का श्रोत बनती है। बेहतर परिणाम के लिए अभी के परिणाम से हम सीखें।

परिणाम हमें बताते हैं कौन सी बातें, कौन से प्रयास हमारी उन्नति का कारक रहे कौन सी बाते, अथवा कौन से कारण हमें मन इच्छित परिणाम पाने में बाधक रहें। ऐसे मे व्यक्ति को चाहिये, जीवन की इस अनवरत यात्रा में सदा बेहतर परिणाम पाने के लिए वह अच्छी बातों को जीवन का हिस्सा बनाये। परिश्रम करने की आदत को अपना स्वभाव बनाये। कारणों को निवारण में बदलने के लिए ज्ञान दृष्टि को खुला रखें। ईश्वरीय शिक्षाओ के आधार पर मिले सुझावो को कार्य में लगाकर कारणो को निवारण में तब्दील करें। ज्ञान दृष्टि व्यक्ति में ऐसी क्षमता विकसित करती है कि वह कारणो को भी अपनी उन्नति में सहायक बना लेता है। परिणाम स्वरूप इस यात्रा में उसे जो अनुभव हासिल होते है वे कठिन हालातो में उसकी शक्ति बन उसे साथ देते है। परिणाम हमें सिखाते है हम और बेहतर कैसे पा सकते है। परिणाम ही हमें और बेहतर पाने के लिए संकल्पित करते है। परिणाम ही हमें आगे का रास्ता सुझाते है।

धरती को स्वर्ग बनाने की इस यात्रा में जहां इस धरती का स्वर्ग बनना अपने आप में अन्तिम परिणाम है वहीं इसकी शुरूआत होना अपने आप मे एक अति सुन्दर परिणाम है। इसकी शुरूआत के निमित्त यूँ तो स्वयं ईश्वर ने प्रजापिता ब्रह्मा को साकार माध्यम बनाया और ब्रह्माकुमार व ब्रह्माकुमारियां इस शुरूआत के आदि माध्यम बने। पर आज जबकि धरती माँ की पुकार (मेक मी हेविन) को हम सब सुन रहे है तो हमें चाहिये कि हम भी कुछ करें। आदि पिता व आदि रत्नो को देख, उनके परिणामों से प्रेरित हो हम भी एक कदम बढ़ाये। धरती को स्वर्ग बनाने की दिशा मे हमारे द्वारा उठाये गये एक कदम का परिणाम भी हमें कुछ सिखायेगा, हमें आगे का मार्ग दिखायेगा। हमारी दृष्टि में विराटता लायेगा। एक कदम का परिणाम भी हमें ईश्वर पिता की मदद के रूप में सौ गुणा प्राप्ति का अनुभव करायेगा।

लोग हमें सिखाये इसकी आश न करें। धरती को स्वर्ग बनाने की दिशा में आप खुद आगे बढ़े। हर अच्छी बात को स्वीकार कर उसे अपनी शक्ति बनाये। ईश्वर पिता की स्मृति में रह कर हिम्मत को अपने आप में जगाये। परमेश्वर पिता के रुहानी ज्योति रूप का ध्यान कर अपने बुद्धि रूपी नेत्र की ज्योति बढ़ाये। यही द्वियता की ज्योति परिणामों से सीखने की समझ देगी। ये ज्योति ही जीवन की ज्योति को जगाये रखेगी। ये ज्योति ही धरती माँ की आवाज को पूरा करने का बल देगी। जो लोग अपनी ज्योति मे रहकर जीना सीख जाते है वे ईश्वर पिता की ज्योति मे परिणामों का बेहतर तरीके से आंकलन करते है। वे अपेक्षित परिणाम न पाने की स्थिति में भी उन परिणामों से आगे के लिए वह प्राप्त कर लेते है जो इनकी मंजिल को बढ़ाने में मददगार साबित होते है, वे परिणाम को विधि की भावी समझ उनसे शिक्षा ले आगे बढ़ जाते है। ऐसे लोग ही सच्चे अर्थो में ईश्वर पुत्र है ऐसे लोग ही सच्चे-सच्चे धरती माँ के सपूत है। जो लोग परिणामो के नकारात्मक प्रभाव से प्रभावित हो अपने जीवन की इतिश्री कर लेते है उनसे न ईश्वर और न ही धरती माँ कुछ अपेक्षा रख सकती है। हम सब परिणामों से सीख ले धरती माँ की आवाज को पूरा करे और माँ के गौरव को बढ़ाये।